

नवपाषाणिक संस्कृति और लोक जीवन (पक्काकोट पुरास्थल के विशेष सन्दर्भ में)

डा. संजय कुमार कुशवाहा

सहायक आचार्य, प्राचीन इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज

सारांश :-

संस्कृति एक सतत चलने वाली प्रक्रिया है, जैसे-जैसे मानवीय बुद्धि का विकास होता गया, वैसे-वैसे मानव के इर्दगिर्द उसका समाज और लोक विकसित होता गया। मौसम के परिवर्तन के साथ-साथ मानव पाशुपत प्रवृत्ति से मानवीय प्रवृत्ति की ओर अग्रसर हुआ। मानव से तात्पर्य ऐसे जीव से है, जो अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु अपनी बुद्धि का प्रयोग करते हुए संसाधनों का निर्माण करता है। उदयप्रकाश द्वारा संसाधनों का वर्णन पिता से जोड़ते हुए कविता के माध्यम से कुछ इस प्रकार किया है-

पिता झाड़-झंखाड़, घाटियों और पत्थरों से भरे चटियल मैदान थे।
पिता सागौन, शीशम, बबूल, तेंदुओं और हिरनों से भरे बीहड़ थे।
मानव की शारीरिक बनावट एवं बुद्धि के विकास के साथ-साथ आवश्यक संसाधनों में उत्तरोत्तर परिवर्तन परिलक्षित होता गया।

प्रारंभ में मानव पाषाण और जानवरों के शिकार के ऊपर निर्भर था, लेकिन धीरे-धीरे शिकार की प्रक्रिया से निकलते हुए, अन्न-संग्राहक अवस्था से कृषक अवस्था की ओर अग्रसर हुआ।

Article Publication:

Published online on: 30/12/2024

Corresponding Author:

डा. संजय कुमार कुशवाहा

सहायक आचार्य, प्राचीन इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज

Email: sanjubhu2@gmail.com

©Sadanlal Sanwaldas Khanna Mahila Mahavidyalaya



Scan For Paper

व्यवस्थित कृषि के माध्यम से मानवीय जीवन जीने की प्रक्रिया का विकास प्रागैतिहासिक काल के अंतिम चरण नवपाषाण काल में दिखाई देता है।

इस कालखंड में विकसित संस्कृति को नवपाषाणिक संस्कृति के नाम से जाना जाता है। इस संस्कृति के लोक जीवन की झलक तत्कालीन समय में निर्मित किए जाने वाले भौतिक अवशेषों में परिलक्षित होती है। अगर मानव के प्रारंभिक जीवन को देखा जाए तो मानव का प्रारंभिक रहवास जल स्रोत के नजदीक था। इस बात की पुष्टि वर्तमान समय में किए गए अध्ययनों और खोजों से होती है। भारत के विभिन्न क्षेत्रों से भी जल स्रोत के नजदीक मानव के बसने और अपनी संस्कृति एवं सभ्यता का विकास करने के साक्ष्य की प्राप्ति हुई हैं।

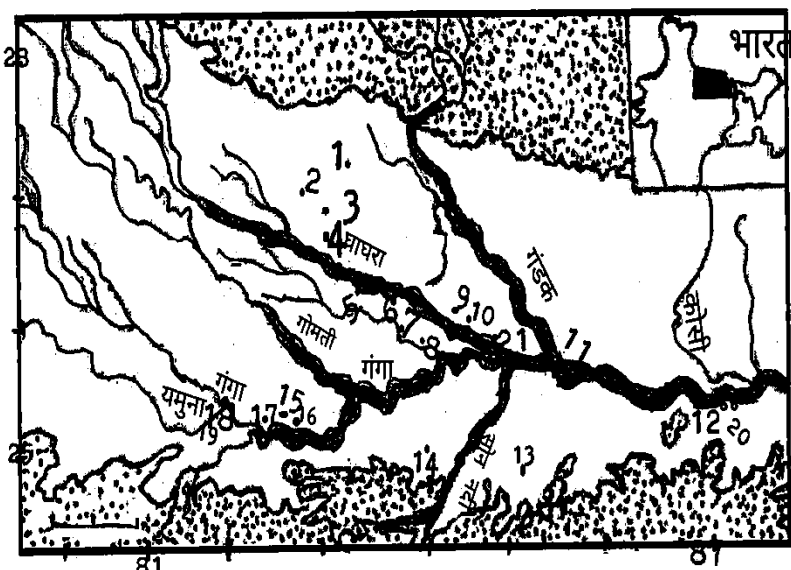
प्रारंभ में मानव का आवास पहाड़ियों और कंदराओं में मिलता है लेकिन जैसे-जैसे मानव के शारीरिक बनावट और जलवायु में परिवर्तन हुआ, आजीविका की तलाश में तराई क्षेत्रों से होता हुआ नवपाषाण काल तक आते-आते मैदानी क्षेत्र में प्रवेश किया और मध्य गंगा मैदान को भी अपना क्रीड़ा स्थल बनाया, जिसके साक्ष्य चिरांद, सेनुआर, ताराडीह, वैना, सोहगौरा, पक्काकोट इत्यादि स्थलों से प्राप्त हुए हैं। प्रस्तुत पत्र में पक्काकोट से प्राप्त साक्ष्यों के आधार पर नवपाषाणकालीन संस्कृति और लोक जीवन का वर्णन करते हुए पुरास्थल की महत्ता को उद्घाटित किया गया है।

Keywords- Exploration, Excavation, Epi- palaeolithic, Mesolithic, Neolithic, Chalcolithic, Antiquity, Physical Heritage, Fortification, Structural.

(सर्वेक्षण, उत्खनन, अनुपुरापाषाण, मध्यपाषाण, नवपाषाण, ताम्र पाषाण, अवशेष, भौतिक विरासत, दुर्गीकरण, संरचनात्मक)

मध्य गंगा मैदान का भारतीय इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान रहा है क्योंकि यह क्षेत्र प्राचीन काल से ही भारतीय अर्थव्यवस्था का रीढ़ साबित हुआ है। इस क्षेत्र में मानवीय क्रियाकलाप अनुपुरापाषाण काल और मध्यपाषाण काल से ही प्रारम्भ हो जाते हैं और इस काल तक आते-आते यह क्षेत्र मानव के स्थाई आवास, कृषि और पशुपालन का केन्द्र बन जाता है जिसका साक्ष्य विगत पाँच दशकों में किये गये पुरातात्विक अन्वेषणों और उत्खननों से प्राप्त होता है। परम्परागत रूप से देखा जाय तो कृषि के प्रारम्भ तथा इस काल के मानव की खाद्य प्राप्त करने की इच्छा ने मानवीय श्रम, कार्य कुशलता और मानवीय स्वास्थ्य में गुणात्मक और वैधानिक सुधार किया (चाइल्ड, 1951)। बहुत से विद्वानों द्वारा

आदिवासी जनजातियों का अध्ययन कर यह बताया गया है कि कृषि का प्रारम्भ बढ़ती जनसंख्या और जंगल श्रोत के नष्ट होने का परिणाम था (बिनफोर्ड. 1966: 313-341; कोहेन. 1977 84; फ्लेनेरी . 1969 : 73-100; मेयर्स. 1971 : 101-121)। मध्य गंगा के मैदान में भी इस काल तक आते-आते जनसंख्या वृद्धि के संकेत प्राप्त होते हैं क्योंकि यह क्षेत्र कृषि के उत्पादन के लिए उपयुक्त था और जलवायु परिवर्तन के कारण जंगली श्रोत का भी विनाश हो रहा था। अतः मानव की अर्थव्यवस्था का प्रमुख आधार कृषि ही हो गया था जिसकी पुष्टि इस क्षेत्र के उत्खनित प्रमुख स्थलों सोहगौरा (आई०ए०आर० 1974-75 : 46-47; चुतर्वेदी. 1985 : 101-108), चिरांद (आई.ए०आर० 1981-82 : 13-14; वर्मा. 1989 : 103-105), सेनुवार (सिंह. 1990 : 6-18, 1997 : 3-33, 2001 : 109-118), लहुरादेवा (तिवारी. 2001), इमलीडीह खुर्द (सिंह. 1992-93 : 21-35 : 21-35, 1993-94 : 41-48), झूँसी (मिश्रा व पाल. 2002-2003 : 227-229), चेचर-कुतुबपुर (आई०ए०आर० 1977-78 : 17-18), ताराडीह (आई०ए०आर० 1984-85 : 10, आई०ए०आर० 1986-87 : 23-24, आई०ए०आर० 1987-88 : 9-11), हेतापट्टी (पाल-गुप्ता. 2005 : 163-168), भुनाडीह (सिंह एण्ड सिंह. 1997-98 : 11-29), वैना (सिंह और सिंह. 1994-95 : 21-36), मनेर (आई०ए०आर० 1985-86 : 11-12; आई०ए०आर०. 1986-87 : 25-26; आई०ए०आर० 1987-88 : 11-12; आई०ए०आर० 1988-89 : 7-8) और पक्काकोट (दुबे, सिंह और लामा. 2012 : 15-39) (मानचित्र: 1) से प्राप्त अवशेषों से होती है।



मानचित्र 1: मध्य गंगाघाटी के प्रमुख नवपाषाणिक उत्खनित स्थल

1. सोहगौरा 2. इमलीडीह खुर्द 3.धुरियापार 4.नरहन 5.खैराडीह 6.भुनाडीह 7.पक्काकोट 8.वैना 9.मॉझी
- 10.चिरांद 11. चेचर-कुतुबपुर 12.चम्पा 13.सोपनुर 14.सेनुवार 15.अगियाबीर 16.द्वारकापुर 17.लहुरादेवा
- 18.झूंसी 19.हेतापट्टी 20.ओरिएण 21.मनेर

इस क्षेत्र में सर्वेक्षण और उत्खनन का कार्य इलाहाबाद विश्वविद्यालय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, दीन दयाल उपाध्याय विश्वविद्यालय गोरखपुर, पटना विश्वविद्यालय, उत्तर प्रदेश पुरातत्त्व विभाग, भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण की पटना सर्किल द्वारा समय-समय करवाया गया जिसके परिणाम स्वरूप नवपाषाणिक साक्ष्य प्रकाश में आये तथा गंगा मैदान का सांस्कृतिक अनुक्रम अनुपुरापाषाण, मध्यपाषाण, नवपाषाण, ताम्र पाषाण, लौह काल से ऐतिहासिक काल तक स्पष्ट हुआ।

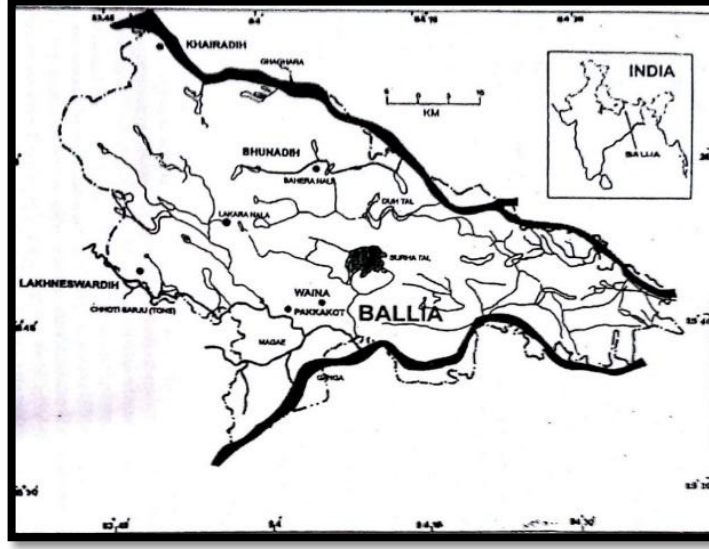
नवपाषाण कालीन संस्कृति के संदर्भ में हाल ही में उत्खनित पुरास्थल पक्काकोट का महत्वपूर्ण स्थान है। इस स्थल को प्रकाश में लाने का कार्य काशी हिंदू विश्वविद्यालय के प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग के तत्कालीन विभागाध्यक्ष प्रो.सीताराम दुबे एवं उनके अन्य सहयोगियों का है हालांकि इससे पूर्व उत्खनित पूरा स्थल चिरांद का भी मध्य गंगा मैदान की नवपाषाण कालीन संस्कृति में विशेष महत्व है क्योंकि जब देश के हर कोने में नवपाषाणिक अवशेष मिल रहे थे, गंगा के मैदान में इस पुरास्थल की खोज से पहले अभाव प्रतीत होता था। विद्वानों का मानना था कि गंगा मैदान में इस काल में कोई मानवीय क्रिया-कलाप नहीं होता था अर्थात् मध्य गंगा के मैदान का इतिहास इस काल में अन्धकारमय था। इस भ्रान्ति को खत्म करने का कार्य इस पुरास्थल की खोज और उत्खनन से प्राप्त अवशेषों ने किया। पहले जो प्रागैतिहासिक विद्वानों की मान्यता थी कि नवपाषाणिक स्थल केवल पहाड़ी क्षेत्रों में ही उपलब्ध हो सकते हैं क्योंकि पहाड़ी में पानी और कच्चे माल आसानी से मिल जाते थे लेकिन मैदानी भागों में इनका अभाव था। इस भ्रान्ति को भी इस पुरास्थल की प्राप्ति ने तोड़ दिया। इसलिए यह पुरास्थल गंगा मैदान और भारत के प्रागैतिहास में महत्वपूर्ण स्थान रखता है जिसके माध्यम से मध्य गंगा मैदान का इतिहास भी प्रागैतिहासिक काल तक स्पष्ट हो गया और सांस्कृतिक कालानुक्रम की तारतम्यता को भी स्पष्ट आधार मिला। चिरांद के उत्खनन के सन्दर्भ में आल्चिन महोदय ने कहा कि “चिरांद भारत की नवपाषाणिक संस्कृति के लिए उगता हुआ सूरज है।” एन0आर0 बनर्जी ने चिरांद के उत्खनन के लिए उत्खनन कर्ता को कहा कि “तुमने एक नयी दुनिया को खोजा है” तथा बी0वी0 लाल

द्वारा भी चिरांद से प्राप्त हड्डी के औजार के लिए विशेष रूप से उत्खननकर्ता को भाग्यशाली बताया है। इस पुरास्थल की खोज के बाद और बहुत से पुरास्थल समय-समय पर प्रकाश में आने लगे जैसे-सेनुवार, चेचर कुतुबपुर, ताराडीह, सोहगौरा इत्यादि (वर्मा. 2007 : i-ii)।

वैसे ही यदि पक्काकोट पुरास्थल के साक्ष्यों को देखा जाए तो यहाँ से मध्यगंगा मैदान में मानव के आगमन से लेकर पूर्व मध्यकाल के पहले तक के संपूर्ण मानव इतिहास का क्रमबद्ध खाका मिलता है। ग्राम्य संस्कृति से नगर और नगर से राजवंशों तक के उदय का लेखा-जोखा पक्काकोट है। यही नहीं बल्कि यह कहा जा सकता है की मानव की आवासीय व्यवस्था का क्रमबद्ध दर्शन है 'पक्काकोट'। मध्य गंगा मैदान की आर्थिक विकास की सम्पूर्ण गतिकी की झलक भी पक्काकोट है। कृषक समाज से नगरी और नगरी जीवन से सामंती एवं वंशीय इतिहास की भौतिक विरासत है 'पक्काकोट'। सांस्कृतिक उत्थान और विकास की भौतिक गाथा है 'पक्काकोट'। दुर्गीकरण की प्रक्रिया का प्रारंभिक साक्ष्य भी पक्काकोट से ही प्राप्त होता है। पुरास्थल कि उक्त विशेषताओं को देखते हुए, प्राप्त साक्ष्यों के नवपाषाणिक सन्दर्भ का विस्तृत विवेचन निम्नवत हैं-

पक्काकोट (25°45'10" उत्तरी अक्षांश, 84°0'30" पूर्वी देशान्तर)

पक्काकोट पुरास्थल का भी मध्य गंगा मैदान की प्राचीनता एवं महत्ता को स्पष्ट करने में महत्वपूर्ण स्थान है। मध्य गंगा मैदान के पुरातात्विक इतिहास में यह नवीनतम् उत्खनित पुरास्थल है। इस पुरास्थल पर मानवीय क्रियाकलाप नवपाषाण काल से प्रारम्भ हो चुका था। इस बात की पुष्टि मई 2011 में किये गये उत्खनन के उपरान्त हुई। यह पुरास्थल छोटी सरयु नदी के तट पर उत्तर प्रदेश के बलिया जिले में स्थित है (मानचित्र: 2)। यह जिला उत्तर प्रदेश का सबसे पूर्वी जिला है। इसका विस्तार 25°33' और 26°11' उत्तरी अक्षांश तथा 83°38' और 84°39' पूर्वी देशान्तर तक है। इस जिले का क्षेत्रफल 2981 वर्ग किमी० है। इस जिले के पश्चिम में आजमगढ़, उत्तर में देवरिया, उत्तर-पूर्व और दक्षिण-पूर्व में बिहार राज्य की सीमा तथा दक्षिण-पूर्व में गाजीपुर जिला स्थित है (सिंह. 1973: 24)। इस जिले की प्रमुख नदियां में गंगा, घाघरा और सरयु है।



मानचित्र 2: पक्काकोट पुरास्थल का मानचित्र

पक्काकोट पुरास्थल पाटलिपुत्र से लुम्बिनी जाने वाले प्राचीन व्यापारिक मार्ग पर स्थित है। यह मार्ग पाटलिपुत्र से बक्सर, टिकादेवरी, खैराडीह, सोहगौरा, कोपिया, कपिलवस्तु होते हुए लुम्बिनी तक जाता है (चक्रवर्ती. 2001, दुबे. 2012: 17)। पक्काकोट पुरास्थल का विस्तार बहुत बड़े क्षेत्र में है (चित्र संख्या: 1)।

मध्य गंगा मैदान में ऐसा कोई पुरास्थल नहीं जिसका विस्तार क्षेत्र इतना विस्तृत हो। यह पुरास्थल केवल 4 किमी⁰ क्षेत्र में ही विस्तृत नहीं है बल्कि पुरास्थल का थाला क्षेत्र 8 किमी⁰ के क्षेत्र में है जिसमें बहुत से पुरास्थल आ जाते हैं, जैसे-‘मटही’, जगदीशपुर, अकौनी, चितबरागाँव, वैना (सिंह और सिंह. 1995-96 : 41-61), कारो आदि। वर्तमान में छोटी सरयु नदी पुरास्थल से 1.5 किमी⁰ की दूरी पर बहती है लेकिन बुढ़ी नदी (लकड़ा नाला) पुरास्थल के समीप उत्तर से गुजरती है जो आगे जाकर टोंस नदी में चितबरागाँव के समीप मिल जाती है। पक्काकोट का टीला दुर्गीकृत दिवाल से घिरा हुआ है तथा चार टावर टीले के ऊपर दिखाई देते हैं जो पूरी तरह अखण्डित हैं। टीले के पश्चिमी और दक्षिणी भाग पर पक्काकोट गाँव बसा हुआ है तथा बहुत से नये मकान टीले पर बिखरी ईंटों के प्रयोग से बने हुए हैं। टीले का तेजी से क्षय भी हो रहा है। इसी कारण से काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के सीताराम दुबे, अशोक कुमार सिंह तथा गौतम कुमार लामा द्वारा मई 2011 में पुरास्थल का उत्खनन कराने का निर्णय किया गया। उत्खनन का उद्देश्य पुरास्थल का सांस्कृतिक अनुक्रम, दुर्गीकरण की व्यवस्था और संरचनात्मक अवशेष को प्राप्त करना तथा जानना था। प्रथम वर्ष के उत्खनन का प्रमुख उद्देश्य चारों टीलों के सांस्कृतिक अनुक्रम को जानना था। इस क्रम में 16 ट्रेंचों को भिन्न-भिन्न टीलों पर खोदा गया (दुबे व अन्य. 2012 : 15-25)।



चित्र संख्या 1: पक्काकोट पुरास्थल का विहंगम दृश्य (दुबे व अन्य. 2012)

हालाँकि इससे पहले भी इस क्षेत्र में सर्वेक्षण कार्य ए0सी0एल0 कार्लाइल द्वारा 1874-75 में अलेक्जेंडर कनिंघम के निर्देशन में किया गया था। इसके बाद 1891 में 'फ्यूहरर' महोदय द्वारा सर्वेक्षण किया गया (फ्यूहरर. 1891)। इसी क्रम में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग द्वारा 1960 के दशक में, फिर 1994-95 में सर्वेक्षण किया गया (I.A. R. 1963.64 : 43, सिंह और सिंह. 1994-95 : 21-36)। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय द्वारा ही 1980-86 में खैराडीह पुरास्थल का उत्खनन भी करवाया गया। यह स्थल भी बलिया जिले में घाघरा नदी के तट पर स्थित है (सिंह. 1987-88 : 28-34, 1990-91 : 78-86, त्रिपाठी एवं अन्य. 2004 : 1-70)। उत्खनन के परिणाम स्वरूप ताम्रपाषाण काल से लेकर कुषाण काल तक अवशेष। 1993-94 में गाँव से गाँव सर्वेक्षण के तहत पी0 सिंह और उनकी टीम द्वारा भी पक्काकोट पुरास्थल का सर्वेक्षण किया गया था (सिंह एवं अन्य. 1994-95 : 21-56) फिर प्रो. दुबे और उनकी टीम द्वारा जुलाई 2010 में पक्काकोट पुरास्थल का सर्वेक्षण कार्य किया गया और एक नये आयाम की खोज दुर्गीकृत पुरास्थल के रूप में प्राप्त हुई।

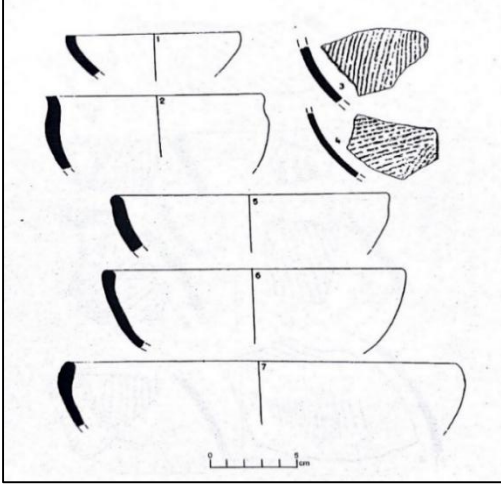
मध्य गंगा मैदान में पक्काकोट के अलावा और भी पाँच पुरास्थलों की प्राप्ति हुई है जो दुर्गीकृत नगर हैं ये हैं - राजघाट, खैराडीह, नहुष का टीला, मसोनडीह और बैराठ (चक्रवर्ती और अन्य. 1998: 103-118)।

सांस्कृतिक अनुक्रम

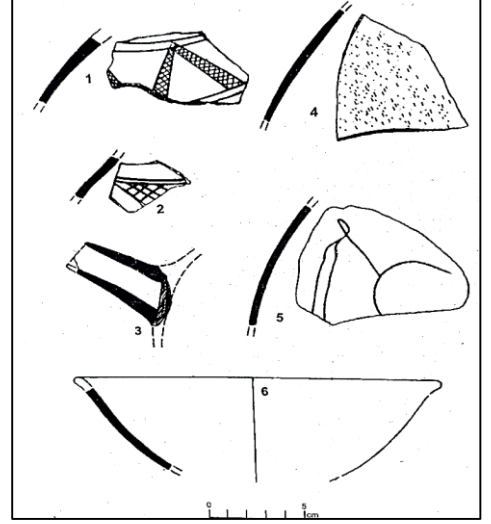
पक्काकोट पुरास्थल का मई 2011 में प्रथम उत्खनन कार्य प्रारम्भ हुआ जो मुख्यतः सांस्कृतिक अनुक्रम को जानने के लिए ही किया गया था। इस सीमित उत्खनन के परिणाम स्वरूप यहाँ पर पाँच कालों का प्रमाण प्राप्त हुआ जिसका समय लगभग 5000 ई0पू0 से लेकर 7वीं शताब्दी ई0 तक के बीच निर्धारित किया गया है (दुबे व अन्य. 2012 : 27)। इन पाँच कालों का विभाजन प्राप्त मृदभाण्डों और अन्य पुरावशेषों के आधार पर किया गया है। ये काल निम्नवत् हैं-

- 1) नवपाषाण काल
- 2) ताम्रपाषाण काल
- 3) उत्तरी कृष्णमार्जित मृदभाण्ड
- 4) शृंग-कुषाण काल
- 5) गुप्त और उत्तर-गुप्त काल।

पक्काकोट पुरास्थल का प्रथम काल नवपाषाण कालीन संस्कृति से सम्बन्धित है। पुरास्थल के टीला नं0 1 से 45 से. मी. का सांस्कृतिक जमाव प्राप्त हुआ जो नव पाषाण काल/प्रारम्भिक आवास से सम्बद्ध है। इस काल का निर्धारण यहाँ प्राप्त डोरी छापित, लाल मृदभाण्ड तथा सादे लाल पात्रों के आधार पर किया गया है (चित्र संख्या: 2) इस काल का मुख्य पात्र प्रकार कलश/घट और लोटा है। यहाँ कुछ ऐसे पात्र के टुकड़े मिले हैं जिस पर पकाने के बाद अलंकरण किया गया है जिसमें अधिकांशतः घड़े हैं। कुछ पात्र खण्ड ऐसे हैं जिनके ऊपर पकाने के बाद खुरेच कर अलंकरण किया गया है और ये पात्र तुलनात्मक रूप से इमलीडीह खुर्द (सिंह. 1993 : 21-36) एवं लहुरादेवा के प्रथम काल के पात्रों से समानता रखते हैं (तिवारी एवं अन्य. 2002 : 54-62)। इन पात्रों के अलावा यहाँ से विभिन्न प्रकार के टोंटी वाले लोटा के आकार के पात्र तथा चिपकाऊ अलंकरण वाले पात्रों के टुकड़े भी मिले हैं।



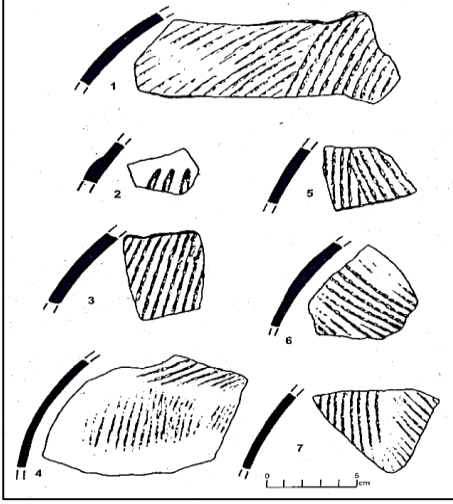
चित्र संख्या 2: पक्काकोट से ग्रास लाल पात्र (दुबे व अन्य. 2012: 44)



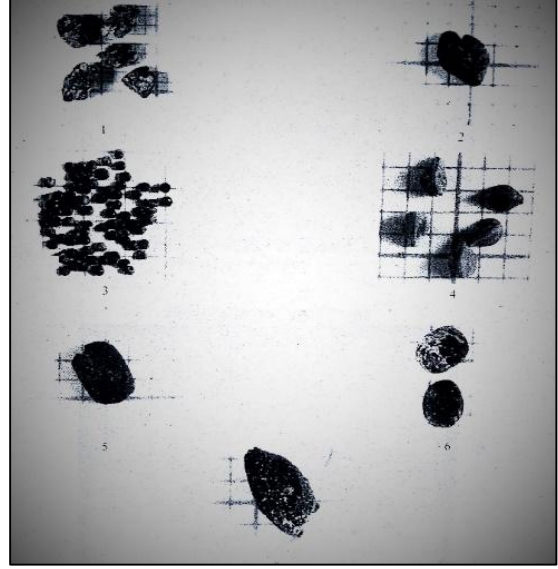
चित्र संख्या 3: लाल रंग के डोरी छाप मृदभाण्ड (दुबे व अन्य. 2012)

इस काल के मृदभाण्डों में मुख्यतया रस्सी की छाप वाले पात्र (चित्र संख्या :3), लाल पात्र तथा रस्टिकेटेड पात्र हैं। रस्टिकेटेड पात्रों की संख्या पक्काकोट के इस चरण में बहुतायत संख्या में मिले हैं। यह रस्टिकेशन पात्रों के आधार भाग में मिलता है। इस तरह के पात्रों को अच्छी तरह से नहीं पकाया गया है तथा ये खराब किस्म के पात्र हैं। यहाँ से जो घड़े मिले हैं वे हल्के लाल रंग के बड़े आकार के तथा रस्टिकेटेड प्रकार के हैं (चित्र संख्या: 4)। रस्सी की छाप वाले मृदभाण्ड यहाँ से अच्छी संख्या में मिले हैं जो पात्रों के ऊपरी भाग पर मिलती है। इन पात्रों के ऊपर रस्सी की छाप लगाने के बाद पकाने से पहले गाढ़ा लेप लगाया जाता था।

इन पात्रों में कटोरे तथा कलश या घट प्रमुख हैं। कुछ कटोरों के आन्तरिक भाग में चमकीली घिसावट की गयी है। इस तरह के पात्र इमलीडीह के प्रथम काल से भी मिलते हैं (सिंह. 1992-93 : 1-17)। लाल पात्रों में कटोरे, नाद की तरह के पात्र तथा विभिन्न प्रकार के घड़े हैं (चित्र संख्या: 5)। कुछ छिद्रित कटोरे भी लाल पात्र के रूप में मिले हैं।

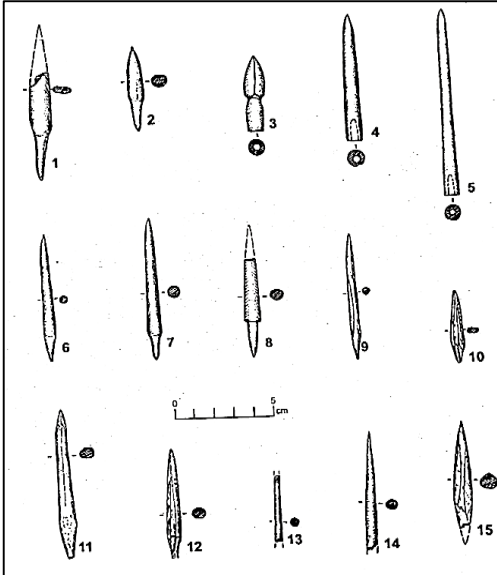


चित्र संख्या 4 : लाल पात्र परम्परा का घड़ा (दूबे व अन्य, 2012: 45)

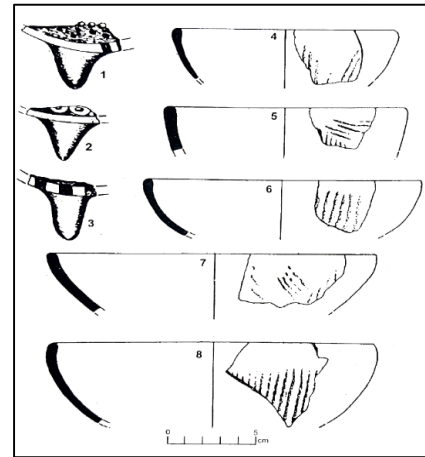


चित्र संख्या 5: लाल रंग का कटोरा एवं पाद युक्त घड़ा (दूबे व अन्य, 2012 : 48)

पक्काकोट के नवपाषाणिक चरण से हड़डी के उपकरण में केवल एक टैंड बाणाग्र मिला है (दूबे व अन्य, 2012 : 128) (चित्र संख्या: 6)। धात्विक प्रमाण इस काल में अनुपस्थित है तथा पत्थर के ताबीज, मनके तथा लटकन भी इस चरण से नहीं मिलते हैं। पक्की मिट्टी से बनी मृणमय वस्तुएँ जैसे मानवाकृतियाँ, पशु आकृतियाँ आदि भी इस चरण में अनुपस्थित हैं।



चित्र संख्या 6: हड़डी के हथियार



चित्र संख्या 7: अनाज के अवशेष (दूबे व अन्य 2012)

आवासीय व्यवस्था

पक्काकोट के नवपाषाणिक चरण में मानव बाँस-बल्लियों और घाँस-फूस से अपने आवास का निर्माण करता था। बाँस-बल्लियों के निशान जली हुई मिट्टी के टुकड़ों के साथ मिलते हैं (दुबे व अन्य. 2012: 27)। पुरास्थल पर नीचले स्तर का सीमित क्षेत्र में उत्खनन होने के कारण आवासीय व्यवस्था के बारे में ज्यादा प्रमाण नहीं मिल सका है लेकिन प्राप्त प्रमाणों के आधार यह कहा जा सकता है कि मानव झोपड़ियों का निर्माण कर उसमें निवास करता था।

खाद्यान्न और जीव-जन्तु

पक्काकोट के उत्खनन से विभिन्न प्रकार के खाद्यान्न के अवशेष भी मिले हैं (चित्र संख्या: 7) जिसमें गेहूँ (टिट्रकम एसटिवम), जौ (होरडियम एसपी), चावल (ओरिजा सटाइवा), जंगली पालक (चेनोपोडियम एलबुम), मूँग, मसूर (लिनस कुलीनरिस), मटर (पिसुम सटाइवम), सरसों (ब्रैसिका एसपी), सेम (डेलिथस बिफ्लोरस) आदि के साक्ष्य प्रमुख हैं। इन अनाजों के दाने जले हुए तथा टुटी-फुटी अवस्था में मिले हैं जिनको चालन विधि द्वारा अलग किया गया है जिसमें अनाज, दालों, फल के बीज तथा तने के टुकड़े प्राप्त किये गये हैं (दुबे व अन्य. 2012: 206-209)।

पक्काकोट के उत्खनन से कुछ जीव-जन्तुओं के भी अवशेष मिले हैं जिसमें गाय, भैंस (चित्र संख्या :10), भेड़, बकरी आदि हैं जो पशुपालन की ओर संकेत करते हैं। कुत्ते के दांत के साक्ष्य भी यहाँ से मिले हैं जिससे लगता है कि कुत्ता को भी पालतु जानवर के रूप में पाला जाता था। जंगली जानवरों में हिरण (एक्सीस एक्सीस), जंगली सुअर (सुस स्क्रोफा) (चित्र संख्या : 9), खरगोश/खरहा (लेपस निग्रीकोलिस) तथा कछुआ (कचुगा टेवटा) (चित्र संख्या :8) आदि के साक्ष्य मिले हैं (दुबे व अन्य. 2012: 210-213)। जीव-जन्तुओं के अवशेषों की जाँच पी0पी0 जोगलेकर के द्वारा किया गया है (सारणी: 1)। पक्काकोट के लोग भोजन के लिए मछली, कछुआ और घोंघा का भी प्रयोग करते थे (दुबे व अन्य. 2012 : 139)।

सारणी-1

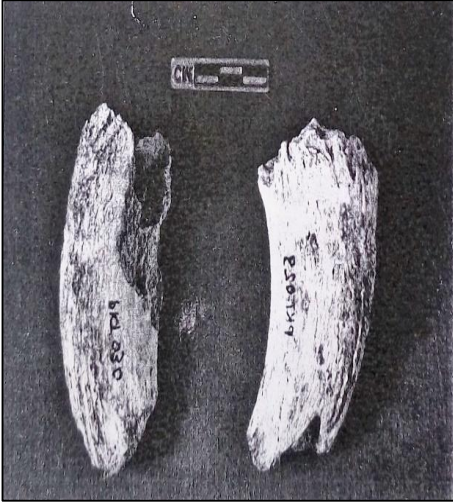
पक्काकोट के नवपाषाणिक चरण से प्राप्त जन्तु अवशेष

(दूबे व अन्य. 2012: 212-213)

क्र.सं.	जन्तु का नाम	संख्या
1.	बॉस इण्डिकस	5
2	बॉस/बुबलुस	4
3	बुर्बेलस बुबैलिस	2
4	कैपरा हिरकस	3
5	बी0 टैंगोकैमेलस	1
6	एक्सीस-एक्सीस	1
7	सुस स्कोफा	1
8	लेपस नाइग्रीकोलिस	1
9	कचुगा टीटा	1
	योग	19



चित्र संख्या 8: कंचुगा टीटा का अस्थि अवशेष



चित्र संख्या 9: सुस स्क्रोफा का मैन्डिबल



चित्र संख्या 10: बुर्बेलस बुनैलिस का सिंग का अवशेष

उपर्युक्त विवरण के आधार पर यह कहा जा सकता है कि नवपाषाणकालीन संस्कृति मानवीय विकास में एक ऐसा पड़ाव था, जहाँ स्थाई जीवन के साथ-साथ अर्थव्यवस्था में ऐसे तत्वों का समावेश होता है, जो आज तक मानव जीवन की अर्थव्यवस्था के आधार हैं। इस काल का मानव अनाज के दानों के साथ-साथ, फल-फूल तथा छोटे

जानवरों के शिकार से अपना भोजन प्राप्त करता था। पशुपालन तथा कृषि पक्काकोट की अर्थव्यवस्था का प्रमुख आधार था हालांकि बाद के कालों में व्यापार और वाणिज्य भी यहाँ की अर्थव्यवस्था के अंग बन गये। मध्य गंगा के मैदान में नवपाषाणिक मानव का रहन-सहन मोटे तौर पर लगभग 6000 ई0 पू0 से 2000 ई0 पूर्व के बीच प्रत्येक क्षेत्र में प्रारम्भ हो चुका था और मानव की जीविका का प्रमुख आधार कृषि और पशुपालन था लेकिन छोटे जानवरों के शिकार और मछली, कछुआ, घोंघा, सीपी आदि का भोजन के रूप में सेवन से इन्कार नहीं किया जा सकता है।

इस काल का मानव बाँस-बल्लियों, घाँस-फूस और मिट्टी की सहायता से बनी झोपड़ियों में निवास करता था। मृदभाण्डों में डोरी छाप मृदभाण्ड इस क्षेत्र के लगभग प्रत्येक स्थल से प्राप्त होते हैं। इसके साथ-साथ लाल पात्र, काला व लाल पात्र और धूसर पात्र परम्परा के भी मृदभाण्ड लगभग प्रत्येक क्षेत्र से मिलते हैं। प्रमुख पात्रों में घड़ा, कटोरा, जार और नॉद के आकार के पात्र हैं। उपकरणों और अस्त्र-शस्त्रों में पाषाण के साथ-साथ हड्डी के उपकरण भी प्रचलित थे जिसमें नवपाषाणिक कुल्हाड़ी के अतिरिक्त लघु पाषाण, सील-लोढे, ओखल, मूसल आदि हैं। इसके अलावा मनके, मृणमूर्तियाँ, मिट्टी के खिलौने आदि भी प्राप्त होते हैं। इन सब प्रमाणों के माध्यम से नवपाषाणिक सांस्कृतिक और सामाजिक पक्षों पर प्रकाश पड़ता है। अंततः कह सकते हैं कि नवपाषाण कालीन संस्कृति के मानव का लोक जीवन ग्रामीण परिपाटी पर आधारित था। शिकार की प्रक्रिया से निकलकर मानव अब उत्पादन की प्रक्रिया की ओर अग्रसर हो चुका था अर्थात् अधिकतर आबादी का जीवन-यापन कृषि, पशुपालन और छोटे-छोटे उद्योगों के आधार पर होने लगा था। इनमें बहुत से उद्योग ऐसे हैं, जो आज भी मानव के जीवन-यापन की आधारशिला बने हुए हैं।

सन्दर्भ सूची :-

- इण्डियन आर्कियोलॉजी: ए रिव्यू 1963-64 .
- इण्डियन आर्कियोलॉजी; ए रिव्यू 1974-75 .
- इण्डियन आर्कियोलॉजी: ए रिव्यू 1977-78 .
- इण्डियन आर्कियोलॉजी: ए रिव्यू 1981-82 .
- इण्डियन आर्कियोलॉजी: ए रिव्यू 1984-85 .

- इण्डियन आर्कियोलॉजी: ए रिव्यू, 1985-86 .
- इण्डियन आर्कियोलॉजी: ए रिव्यू, 1986-87 .
- इण्डियन आर्कियोलॉजी: ए रिव्यू, 1987-88 .
- इण्डियन आर्कियोलॉजी: ए रिव्यू, 1988-89 .
- कोहेन, एम. एन. 1977. द फुड क्राइसेस इन प्रीहिस्ट्री . न्यू हेवेन: येल यूनिवर्सिटिज प्रेस .
- चाइल्ड, वी.जी. 1951. मेन मेक्स हिमसेल्फ. न्यूयार्क : मेन्टोर.
- चतुर्वेदी, एस.एन. 1985. "एडवांस ऑफ विन्ध्यन नियोलिथिक एण्ड चाल्कोलिथिक एण्ड एक्सप्लोरेश इन द सरयूपार रीजन ऑफ उत्तरप्रदेश" मैन एण्ड एनवारमेंट IX. आई.एस.पी.क्यू.एस. : पूणे.
- चक्रवर्ती, डी.के. एवं आर.एन.सिंह .1998. "आर्कियोलाजी विटविन बलिया एण्ड राबर्ट्सगंज इन उत्तर प्रदेश नोट्स ऑन सम अल्टी हिस्टोरिक रूट्स ऑफ द एरिया" साउथ एशियन स्टडीज 14 .
- चक्रवर्ती, डी.के. 2001. आर्कियोलाजिकल ज्योग्राफी ऑफ द गंगा प्लेन: द लोअर एण्ड मिडल गंगा. परमानेन्ट ब्लैक: दिल्ली .
- तिवारी राकेश, आर.के. श्रीवास्तव और के.के.सिंह .2001-2002. "एक्सकेवेशन्स एट लहुरादेवा, जिला-सन्त कबीर नगर". पुरातत्त्व-32: नई दिल्ली .
- तिवारी, राकेश, आर.के. श्रीवास्तव, के.के.सिंह, के.एस. सारस्वत एवं आई.वी.सिंह. 2002-2003. "प्रीलिमिनरी रिपोर्ट ऑफ द एक्सकेवेशन एट लहुरादेवा, डिस्ट्रीक्ट सन्तकबीर नगर", यू.पी. 2001, बाइंडर, आर्कियोजॉजिकल इम्प्लीकेशन्स. 'प्रागधारा'-13. लखनऊ: उत्तर प्रदेश .
- दूबे, सीताराम, अशोक कुमार सिंह एवं गौतम कुमार, लामा .2012. पक्काकोट: सम न्यू आर्कियोलाजिकल डायमेन्सन आफ मिड गंगा प्लेन . रिशी पब्लिकेशन: नई दिल्ली ।

- पाल, जे.एन. एवं एम.सी. गुप्ता .2005. "एक्सकेवेशन्स एट हेतापट्टी (इलाहाबाद डिस्ट्रिक्ट): सम पीलिमनरी आब्जरवेशन्स", जर्नल ऑफ इण्टरडिसिप्लिनरी स्टडीज 'इन हिस्ट्री एण्ड आर्कियोलॉजी' न.2 (1) (समर, 2005) : इलाहाबाद .
- पाल, जे. एन. 2008. "द अल्टीमो फॉर्मिंग कल्चर ऑफ द मिडल गंगा प्लेन स्पेशल रिफरेन्स टू द एक्सकेवेशन ऑफ झूसी एण्ड हेतापट्टी" प्राग्धारा नं0 18. लखनऊ।
- फ्लेनरी, के.वी.1969. "ओरिजिन्स एण्ड इकोलॉजिकल इफेक्ट्स ऑफ 'अल्टीमो एग्रीकल्चर' इन डोमेस्टिकेशन एण्ड एक्सप्लोरेशन ऑफ प्लान्ट्स एण्ड एनीमल्स. पी.जे. यूको एण्ड जी0डब्लू डिम्बलेबी (सम्पा.). लन्दन : डेकवर्थ।
- फ्यूहरर, ए.1891. द मान्युमेन्टल एन्टीक्वीटिज एण्ड इन्सक्रिप्शन्स इन द नार्थ-वेस्टर्न प्रोविन्सेज एण्ड औध. न्यू देल्ही: ए.एस.आई.
- मेयर्स, जे.टी. 1971 "द ओरिजिन्स ऑफ एग्रीकल्चर: एन इवोल्युशन ऑफ हाइपोथिसिस," इन प्रीहिस्टोरिक एग्रीकल्चर. एस. स्ट्रेयूवर (सम्पा.): गार्डेनसीटी : नेचुरल हिस्ट्री प्रेस।
- मिश्रा, बी.डी., जे.एन. पाल एवं एम.सी. गुप्ता .2002-2003. "फर्दर एक्सकवेवेशन्स एट झूसी: एवीडेन्स ऑफ निथेलिथिक कल्चर". प्राग्धारा-13. उत्तर प्रदेश राज्य पुरातत्त्व विभाग: लखनऊ.
- विन्फोर्ड, लेसिस.1968. "पोस्ट प्लेस्टोसीन एडेप्टेशन, इन न्यू पर्सपेक्टिव", इन आर्कियोलॉजी. एल.आर.विनफोर्ड एवं एस. आर. विनफोर्ड (सम्पादक).शिकागो: अल्डाइन.
- वर्मा, बी.एस.1971. "एक्सकवेवेशन एट चिराद: न्यू लाइट ऑन इण्डियन न्यूलिथिक काम्प्लेक्स". पुरातत्त्व न. 4. आई0ए0एस0: नई दिल्ली.
- वर्मा बी.एस. .1997. "ए शार्ट नोट ऑन चिरांद एक्सकवेवेशन" इन जे.पी. जोशी (सम्पा.) फैक्ट्स ऑफ इण्डियन सिविलाइजेशन रिसेन्ट पर्सपेक्टिव्स. (एसेज इन हॉनर ऑफ प्रोफेसर बी.बी. लाल. न्यू दिल्ली: आर्यन बुक इण्टरनेशनल .
- वर्मा, बी.एस. 2007. चिरांद एक्सकवेवेशन रिपोर्ट. डाइरेक्टोरेट ऑफ आर्कियोलॉजी: बिहार.

- सिंह, आर.एल. 1973. मिडल गंगा प्लेन, इण्डियन रिजनल जियोग्राफी. बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी: वाराणसी.
- सिंह, बी.पी. 1989. "खैराडीह ए चाल्कोलिथिक सेटलमेन्ट," पुरातत्त्व- (1987-88) 18. आई.ए.एस.: नई दिल्ली.
- सिंह, बी.पी. 1990. "अर्ली फार्मिंग कम्युनिटिज ऑफ कैमूर हिल्स". पुरातत्त्व-19. आई.ए.एस.: नई दिल्ली.
- सिंह, बी.पी. 1990-1991. "एक्सकेवेसन एट खैराडीह". जर्नल ऑफ बिहार पुराविद परिषद. वाल्यूम-IX-X, बिहार.
- सिंह, पी. 1992-93. "आर्कियोलॉजिकल एक्सकेवेसेन्स एट इमलीडीह खुर्द-1992" प्रागधारा-3. लखनऊ: उत्तर प्रदेश.
- सिंह, पी. 1993-94. "फर्दर एक्सकेवेसेन्स एट इमलीडीह खुर्द"-1993 प्रागधारा-4. लखनऊ: उत्तर प्रदेश.
- सिंह, पी. ए. के. सिंह एण्ड ब्रह्मानन्द सिंह .1994-95. "प्रोटोहिस्टोरिक इन्वेस्टीगेशन इन बलिया डिस्ट्रिक्ट, उत्तर प्रदेश". प्रागधारा-6: लखनऊ.
- सिंह पी. एण्ड ए. के. सिंह .1995-1996. "एन एक्सकेवेसेशन एट वैना, जिला बलिया". प्रागधारा नं० 6. लखनऊ.
- सिंह, बी.पी. 1997. "नियोलिथिक एण्ड चाल्कोलिथिक पॉटरी ऑफ मिडल गंगा प्लेन: ए केस स्टडी ऑफ सेनुआर". एन्शियन्ट सेरेमिक्स (हिस्टोरिकल इन्क्वायरिज एण्ड साइंटिफिक एप्रोचेज). पी.सी. पन्त एण्ड विदुला जायसवाल (सम्पा.). न्यू देल्ही: अगम कला प्रकाशन.
- सिंह, पी. एवं ए. के. सिंह, 1997-98, "ट्रायल एक्सकेवेसेन्स एट भुनाडीह, डिस्ट्रिक्ट बलिया (यू.पी.)". प्रागधारा- 8. लखनऊ: उत्तर प्रदेश.

- सिंह, बी.पी. 2001. "स्टेजेज ऑफ कल्चरल डेवेलपमेन्ट इन द मिडल गंगा प्लेन ए केस स्टडी ऑफ सेनुवार". प्रागधारा-11. लखनऊ: उत्तर प्रदेश.
- त्रिपाठी, वी एण्ड एस.के. सिंह .2003-2004. "एक्शकेवेशन एट खैराडीह (1996-97)". भारती अंक 28. काशी हिन्दू विश्वविद्यालय: वाराणसी.